बदहाली निर्माण के दावे और आश्वासन बेअसर, कीचड़ व गड्ढों से जूझ रहे हजारों लोग , टेंडर जारी होने के बाद भी शुरू नहीं हुआ काम

दो प्रमुख सड़कें बदहाल, बरसात में राहगीरों की बढ़ी मुश्किलें

नवभारत,धनपुरी। शहर की दो प्रमुख सड़कें इन दिनों बदहाली की तस्वीर पेश कर रही हैं। इन मार्गों से प्रतिदिन हजारों लोगों का आवागमन होता है, लेकिन सड़कें पूरी तरह जर्जर हो चुकी हैं। वर्षों से सड़क निर्माण और मरम्मत की मांग उठती रही है। हर बार जिम्मेदारों की ओर से आश्वासन तो मिले, लेकिन जमीनी स्तर पर हालात में कोई सुधार नहीं हुआ। नतीजतन बरसात के मौसम में नागरिकों की परेशानियां कई गुना बढ़ गई हैं और लोगों में प्रशासन के प्रति नाराजगी भी लगातार बढ़ रही है। शहर के बघईया नाला से सिद्ध बाबा मंदिर तक जाने वाला मार्ग तथा सुभाष चौक से रेलवे फाटक तक जाने वाली सड़क वर्तमान समय में सबसे अधिक खराब स्थिति में हैं। दोनों मार्गों पर जगह-जगह बड़े-बड़े गड्ढे हो चुके हैं। बारिश के दौरान इन गड्ढों में पानी भर जाने से उनकी गहराई का अंदाजा नहीं लग पाता, जिससे दोपहिया वाहन चालकों को सबसे ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। आए दिन लोग फिसलकर घायल हो रहे हैं, वहीं चारपहिया वाहनों की आवाजाही भी प्रभावित हो रही है। जानकारी के अनुसार इन दोनों सड़कों का प्रबंधन सोहागपुर क्षेत्र प्रबंधन के अधीन है। वर्षों से इन मार्गों की मरम्मत और रखरखाव का कार्य क्षेत्र के सिविल विभाग द्वारा कराया जाता रहा है। हालांकि इस बार सड़कों के चौड़ीकरण और बीच में डिवाइडर निर्माण की योजना बनाई गई। नगर पालिका द्वारा इसके लिए टेंडर भी जारी किए गए, जिससे लोगों को उम्मीद जगी थी कि बरसात शुरू होने से पहले सड़क निर्माण कार्य पूरा कर लिया जाएगा और वर्षों पुरानी समस्या से राहत मिलेगी। लेकिन टेंडर जारी होने के बावजूद समय पर निर्माण कार्य शुरू नहीं हो सका।

बरसात शुरू होने के बाद अब इन दोनों मार्गों की स्थिति और अधिक खराब हो गई है। सड़क पर जगह-जगह कीचड़ जमा है, जिससे पैदल चलना भी मुश्किल हो गया है। वाहन चालकों को गड्ढों और फिसलन के बीच जान जोखिम में डालकर सफर करना पड़ रहा है। स्कूल जाने वाले छात्र-छात्राएं, नौकरीपेशा लोग, व्यापारी और आसपास के ग्रामीण भी प्रतिदिन इसी मार्ग से गुजरते हैं। ऐसे में खराब सड़कें सभी के लिए परेशानी का कारण बनी हुई हैं। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि कई बार जनप्रतिनिधियों और संबंधित विभागों का ध्यान इस ओर आकर्षित कराया गया, लेकिन हर बार केवल आश्वासन ही मिला। सड़क निर्माण को लेकर कई बार मांग उठाई गई, किंतु जिम्मेदार विभागों के बीच समन्वय की कमी के कारण काम आगे नहीं बढ़ सका। लोगों का कहना है कि यदि समय रहते निर्माण कार्य शुरू हो जाता तो बरसात में इतनी दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ता। व्यापारियों का भी कहना है कि खराब सड़क का असर उनके कारोबार पर पड़ रहा है। कीचड़ और गड्ढों के कारण ग्राहक बाजार तक आने से बचते हैं। वहीं वाहन चालकों को बार-बार अपने वाहनों की मरम्मत करानी पड़ रही है, जिससे अतिरिक्त आर्थिक बोझ भी बढ़ गया है। स्थानीय लोगों का यह भी कहना है कि सड़कों की बदहाल स्थिति किसी बड़े हादसे का कारण बन सकती है। रात के समय गड्ढों में भरे पानी के कारण दुर्घटना की आशंका और बढ़ जाती है। कई बार वाहन चालक संतुलन खोकर गिर चुके हैं। इसके बावजूद अभी तक निर्माण कार्य शुरू नहीं होना चिंता का विषय बना हुआ है। नागरिकों ने मांग की है कि संबंधित विभाग और नगर पालिका तत्काल सड़क निर्माण कार्य प्रारंभ कराएं। बरसात के दौरान जहां संभव हो वहां अस्थायी रूप से गड्ढों की मरम्मत कर आवागमन सुचारु बनाया जाए और बारिश समाप्त होते ही सड़क चौड़ीकरण एवं डिवाइडर निर्माण का कार्य प्राथमिकता के आधार पर पूरा कराया जाए। फिलहाल धनपुरी की ये दोनों प्रमुख सड़कें विकास के दावों पर सवाल खड़े कर रही हैं। प्रतिदिन हजारों लोगों की आवाजाही वाले इन मार्गों की बदहाल स्थिति लोगों के धैर्य की परीक्षा ले रही है। अब नागरिकों को उम्मीद है कि जिम्मेदार विभाग जल्द ठोस कदम उठाएंगे, ताकि उन्हें सुरक्षित और सुगम आवागमन की सुविधा मिल सके।

रीजनल कॉलोनी में सफाई व्यवस्था बदहाल

नवभारत,धनपुरी। बरसात का मौसम चल रहा है और इस मौसम में जहां सफाई व्यवस्था बेहतर होनी चाहिए वही सफाई व्यवस्था का इस मौसम में श्रमिक कॉलोनी में हाल कैसा है इसे देखा जा सकता है सवाल इस बात का भी उठना है कि आखिर जिम्मेदार अपनी कौन सी ऐसी जिम्मेदारी निभा रहे हैं जो कॉलोनी की समस्याओं के निराकरण को लेकर कोई ठोस प्रयास नहीं कर रहे हैं वैसे तो पूरे एसईसीएल सोहागपुर एरिया की श्रमिक कॉलोनी में सफाई व्यवस्था पूरी तरह से पटरी से उतरी नजर आती है लेकिन रीजनल कॉलोनी में सफाई व्यवस्था का क्या हाल है इसे पूरी कॉलोनी में देखा जा सकता है यह कॉलोनी अमलाई ओपन कास्ट उप क्षेत्र के अंतर्गत आती है और अगर इस पूरे कॉलोनी में देखा जाए तो कालरी के कई बड़े अधिकारी निवास भी करते हैं और इसके बाद भी अगर कॉलोनी का यह हाल है तो इस पर सवाल उठेगा।

रीजनल कॉलोनी में वर्तमान समय पर सफाई व्यवस्था को लेकर किसी प्रकार का ध्यान नहीं दिया जा रहा है यही कारण है कि पूरे कॉलोनी के अंदर श्रमिक आवासो के पास लहलहाते हुए गाजर घास देखे जा सकते हैं जिनकी सफाई अब तक देखने को नहीं मिल रही है बरसात से पहले ही सफाई व्यवस्था को लेकर जो अभियान चलाया जाना था इस कॉलोनी के अंदर वह देखने को नहीं मिला कालरी के बड़े-बड़े अधिकारी जिस कॉलोनी में निवास करते हो उस कॉलोनी का जब हाल ऐसा हो तो फिर इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि अन्य श्रमिक कॉलोनीयों का हाल क्या होगा गाजर घास के साथ-साथ कॉलोनी में जर्जर नालिया समस्याओं को और बढ़ाने का काम करती है जगह-जगह कचरे का ढेर देखा जा सकता है और यहां पर भी किसी तरह की सफाई नहीं कराई जा रही है सवाल इस बात कभी उठना है कि आखिर जिस कॉलोनी में बड़ी संख्या में श्रमिक निवास करते हैं उनकी समस्याओं के समाधान को लेकर ठोस प्रयास प्रबंधन की ओर से क्यों नहीं किया जा रहा है। जिस तरह से आज रीजनल कॉलोनी में हर तरफ गाजर घास देखी जा रही है उसे कारण से जहां एक तरफ संक्रामक बीमारियों के फैलने का डर बना रहता है तो वहीं दूसरी तरफ जहरीले जीव जंतुओं का भी खतरा यहां पर देखा जा सकता है जिसे लेकर कर्मचारियों में जो यहां निवास करते हैं उनमें चिंता भी देखी जाती है। इस कॉलोनी में आज अगर देखा जाए तो बड़ी संख्या में कर्मचारी निवास करते हैं और उनकी समस्याओं के समाधान को लेकर किसी तरह का प्रयास देखने को नहीं मिलता एरिया महाप्रबंधक से इस और ध्यान देने की मांग की गई है।

एक नजर में

टिकट जांच से कमाए 15 .03 करोड़, 1 .75 लाख मामले पकड़े गए

जबलपुर। पश्चिम मध्य रेल ने जून 2026 में चलाए गए सघन टिकट जांच अभियानों के दौरान बिना टिकट, अनियमित टिकट एवं अनबुक्ड लगेज के साथ यात्रा करने वाले कुल 1 लाख 75 हजार 900 मामलों में कार्रवाई करते हुए अतिरिक्त किराया और जुर्माने के रूप में 15 करोड़ 3 लाख रुपये का राजस्व अर्जित किया। प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबंधक के निर्देश पर मुख्यालय सहित जबलपुर, भोपाल और कोटा मंडलों में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य अधिकारियों के नेतृत्व में यात्री ट्रेनों एवं रेलवे स्टेशनों पर विशेष जांच अभियान चलाए गए। इनमें जबलपुर मंडल में 84,900 मामलों से 7.71 करोड़ रुपये, भोपाल मंडल में 56 हजार मामलों से 4.22 करोड़ रुपये, कोटा मंडल में 31,600 मामलों से 2.86 करोड़ रुपये तथा मुख्यालय सीसीएम स्क्वाड द्वारा 3,400 मामलों से 24 लाख रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। रेल प्रशासन ने यात्रियों से अपील की है कि वे यात्रा से पहले वैध टिकट लेकर ही सफर करें, ताकि किसी भी प्रकार की असुविधा या दंडात्मक कार्रवाई से बचा जा सके।

गांजा समेत नशे का सौदागर गिरफ्तार

नवभारत,जबलपुर। पाटन पुलिस ने मनकेड़ी रोड ग्राम सिंगौरी बंजारी माता मंदिर के पास घेराबंदी कर नशे के सौदागर को गिरफ्तार किया गया ।जिसके कब्जे से 1 किलो 924 ग्राम गांजा, नगदी 200 रूपये, 1 मोबाइल एवं मोटर सायकल जप्त किया गया। टीआई गोपिन्द्र सिंह ने बताया कि एनडीपीएस एक्ट के प्रावधानों के तहत कार्यवाही कर मनकेड़ी रोड ग्राम सिंगौरी बंजारी माता मंदिर के पास गांजा बेचने ग्राहक का इंतजार कर रहे विष्णु उर्फ रंजीत गौड़ 22 वर्ष निवासी ग्राम भरदा थाना बेलखेड़ा को घेराबंदी कर दबोचा गया।

तीन सूबेदार बने रक्षित निरीक्षक, एसपी ने स्टार लगाकर किया सम्मानित

नवभारत,शहडोल। मध्यप्रदेश शासन के गृह मंत्रालय द्वारा जारी आदेश के तहत पुलिस विभाग में पदोन्नति प्राप्त करने वाले अधिकारियों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। पुलिस अधीक्षक संजय कुमार अग्रवाल ने सूबेदार प्रियंका शर्मा, राजमति परस्ते एवं बृजलाल रोकड़े को रक्षित निरीक्षक पद पर पदोन्नत होने पर उनके कंधों पर प्रतीक स्वरूप स्टार लगाकर सम्मानित किया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक श्री अग्रवाल ने नवपदोन्नत अधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि पदोन्नति केवल सम्मान नहीं, बल्कि जिम्मेदारियों में भी वृद्धि का प्रतीक है। उन्होंने अपेक्षा व्यक्त की कि सभी अधिकारी ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन एवं सेवाभाव के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए पुलिस विभाग की गरिमा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएंगे। कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अभिषेक दीवान एवं डीएसपी शिवाली चतुर्वेदी ने भी पदोन्नत रक्षित निरीक्षकों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। समारोह के दौरान पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी नवपदोन्नत अधिकारियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया तथा नई जिम्मेदारियों के सफल निर्वहन के लिए शुभकामनाएं दीं।

विद्यार्थियों तक पहुंचाया डिजिटल सुरक्षा का संदेश

विद्यासागर स्कूल में अवेयरनेस प्रोग्राम

नवभारत बुढ़ार/शहडोल। साइबर अपराधों की बढ़ती चुनौतियों के बीच विद्यार्थियों को डिजिटल दुनिया के खतरों से जागरूक करने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश शासन एवं मध्य प्रदेश पुलिस के 'सेफ क्लिक 2.0' अभियान से प्रेरित होकर मेहुल श्रीवास्तव एवं उनकी टीम द्वारा साइबर अवेयरनेस कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के माध्यम से जहां स्कूली विद्यार्थियों को साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक किया गया, वहीं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को शैक्षणिक सामग्री वितरित कर शिक्षा एवं सामाजिक सहभागिता का संदेश भी दिया गया। अभियान का प्रथम कार्यक्रम विद्यासागर स्कूल, बुढ़ार में आयोजित हुआ। टीम हेड एवं अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद महाकौशल प्रांत के प्रांत मंत्री मेहुल श्रीवास्तव के नेतृत्व में टीम ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से विद्यार्थियों को ऑनलाइन फ्रॉड, फर्जी लिंक, ओटीपी स्कैम, सोशल मीडिया सुरक्षा, साइबर बुलिंग, व्यक्तिगत जानकारी की गोपनीयता तथा सुरक्षित इंटरनेट उपयोग जैसे महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी दी। विद्यार्थियों ने भी साइबर सुरक्षा से जुड़े विषयों में रुचि दिखाते हुए कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता की। साइबर अवेयरनेस प्रेजेंटेशन में मेहुल श्रीवास्तव के साथ मानसी पाण्डेय, पूजा तिवारी, ओम तिवारी एवं कृतिका तिवारी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम में मध्य प्रदेश पुलिस के सब-इंस्पेक्टर सहित विभिन्न पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर शिवम तिवारी, सागर सिंह परस्ते, संस्कार द्विवेदी, अभिराज सिंह चौहान, संबलदास, आशीष साहू, आस्था द्विवेदी, श्रद्धा द्विवेदी एवं प्रियंका सोनी सहित कोर टीम के सदस्य उपस्थित रहे। अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद के शहडोल जिलाध्यक्ष विजय बहरानी, सदस्य गगन वर्मा एवं अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की। विद्यासागर स्कूल के प्राचार्य सुदेश कुमार जैन एवं विद्यालय परिवार का कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष सहयोग रहा। विद्यासागर स्कूल में साइबर जागरूकता कार्यक्रम संपन्न होने के पश्चात टीम ग्राम उधिया पहुंची। यहां शासकीय माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को पुस्तकें एवं अन्य शैक्षणिक सामग्री वितरित की गई।

पीएम आवास योजना बनीं अपनों की योजना, पात्र लाइन में, चहेते ले गए छत

मुंह देखकर बांटे गए आवास
कलेक्टर तक पहुंची शिकायत

नवभारत शहडोल। जनपद सोहागपुर में आवास योजना की दी गई खैरात की जाँच अब जिला कलेक्टर के हाथों में पहुच चुकी है ग्रामीणों ने इसकी शिकायत बकायदे जिले के अधिकारियों से गुहार लगाई है कि मामले की निष्पक्ष जांच हो और पात्र-अपात्र की श्रेणी को ध्यान में रखते हुए कार्यवाही हो। गरीबों को पक्की छत देने के लिए शुरू की गई प्रधानमंत्री आवास योजना ग्राम पंचायत सरईकापा में सवालों के घेरे में आ गई है। ग्रामीणों का आरोप है कि यहां योजना का लाभ जरूरतमंदों की मजबूरी देखकर नहीं, बल्कि चेहरों की पहचान देखकर बांटा गया। जिनके सिर पर छत की सबसे ज्यादा जरूरत थी, वे आज भी इंतजार की कतार में खड़े हैं, जबकि रसूख और पहुंच रखने वाले कथित तौर पर योजना का लाभ उठाकर आगे निकल गए। ग्रामीणों का कहना है कि पंचायत में आवास चयन की प्रक्रिया ऐसी चली कि गरीब की झोपड़ी से ज्यादा कुछ खास चेहरों की सिफारिश मजबूत साबित हुई। शासन के नियम-कायदे और पात्रता के 10 बिंदु शायद कागजों तक ही सीमित रह गए, जबकि हकीकत में आवास स्वीकृति का पैमाना कुछ और ही नजर आया।

नियमों की चौखट पर खड़े रह गए पात्र, अंदर पहुंच गए 'खास' लोग

शिकायतकर्ताओं ने आरोप लगाया है कि कई आवास ऐसे लोगों को स्वीकृत किए गए जो निर्धारित पात्रता के दायरे में नहीं आते। वहीं वास्तविक जरूरतमंद परिवार आज भी टूटी दीवारों और कच्ची छत के सहारे मौसम की मार झेलने को मजबूर हैं ।सवाल है कि अगर योजना गरीबों के लिए है तो फिर गरीबों की सूची में गरीब पीछे और प्रभावशाली लोग आगे कैसे पहुंच गए। क्या पात्रता के नियम सिर्फ निरीक्षण और कागजी खानापूर्ति के लिए बनाए गए हैं।

एक पेड़ मां के नाम अभियान में 2100 पौधों का महाअभियान

नवभारत,ब्यौहारी। मध्यप्रदेश शासन के स्कूल शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार रविवार को विकासखंड ब्यौहारी स्थित साईं मंदिर के पीछे एक पेड़ माँ के नाम अभियान के अंतर्गत वृहद पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वन विभाग, शिक्षा विभाग एवं मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस अभियान में 2100 पौधों का रोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। कार्यक्रम में जिला पंचायत सदस्य पुष्पेंद्र कुमार पटेल, नगर परिषद अध्यक्ष मनोज केशरवानी, डिप्टी रेंजर रामटहल सेन, कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. योगेश चन्द्र गुप्ता, मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के विकासखंड समन्वयक शिवदत्त उर्मलिया, शीला पटेल, शिव बहादुर सिंह, भानू पटेल सहित वन विभाग, शिक्षा विभाग एवं जन अभियान परिषद के अधिकारी-कर्मचारी, जनप्रतिनिधि, सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित रहे। अभियान में शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय मऊ, हाई स्कूल ब्यौहारी, गांधी मेमोरियल स्कूल, मिलेनियम ड्रीम्स इंटरनेशनल हाई स्कूल, माध्यमिक विद्यालय मुदरिया, प्राथमिक विद्यालय वार्ड क्रमांक-2 सहित विभिन्न विद्यालयों के लगभग 700 छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विद्यार्थियों ने कम से कम पांच-पांच पौधे लगाने का संकल्प लिया तथा स्वयं पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण में अपनी सहभागिता निभाई इस अवसर पर विद्यार्थियों को जल, जंगल, जमीन और हरियाली के महत्व पर विस्तृत जानकारी देते हुए पौधों के संरक्षण एवं नियमित देखभाल का संकल्प भी दिलाया गया। वक्ताओं ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी जिम्मेदारी नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है। कार्यक्रम को विशेष बनाने में समाजसेवी अनिल गुप्ता का भी सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम की सफलता में यमुना प्रसाद नापित (नवांकुर संस्था अध्यक्ष), सतीश कुमार लोधी, आशीष द्विवेदी, सुरेंद्र निगम, सत्येंद्र सिंह, सूरज नामदेव, रामजी द्विवेदी, विजय कुमार गुप्ता, राजाराम पटेल, राजेंद्र कुमार पटेल, चंद्रभान गुप्ता, रवि द्विवेदी, राजीव कुमार मिश्रा, संगीता उपाध्याय, संगीता गुप्ता, सीमा दहायत, अंजू सोनी सहित अनेक शिक्षकों, कर्मचारियों एवं स्वयंसेवकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। साथ ही केसरवानी नगर सभा, केसरवानी वैश्य महिला सभा सहित नगर के विभिन्न सामाजिक संगठनों ने सक्रिय सहयोग देकर अभियान को सफल बनाया।पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागरूकता का यह आयोजन क्षेत्र में हरित भविष्य की दिशा में एक प्रेरणादायी पहल साबित हुआ।

पुरानी बस्ती रेल्वे फाटक के पास बना बीमारियों का नाला

बदबू और गंदगी से लोगों का जीना दूभर
क्षतिग्रस्त नाला महीनों से नहीं हुआ दुरुस्त

नवभारत,शहडोल। शहर के पुरानी बस्ती स्थित रेलवे फाटक के पास रेलवे प्रशासन की लापरवाही अब लोगों के स्वास्थ्य पर भारी पड़ने लगी है। रेलवे कॉलोनी एवं रेलवे स्टेशन क्षेत्र से निकलने वाला गंदा और बदबूदार नाले का पानी सड़क किनारे जमा होकर संक्रमण का बड़ा कारण बन गया है। हालात इतने खराब हैं कि क्षेत्र में हर समय दुर्गंध फैली रहती है, जबकि गंदे पानी में मच्छरों की भरमार होने से डेंगू, मलेरिया और अन्य संक्रामक बीमारियों का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है।

रेलवे कॉलोनी व स्टेशन का गंदा पानी सड़क पर फैला

स्थानीय लोगों का आरोप है कि रेलवे फाटक के निर्माण कार्य के दौरान रेलवे प्रशासन ने पुराने नाले को क्षतिग्रस्त कर दिया था। निर्माण कार्य पूरा होने के बाद भी नाले की मरम्मत नहीं कराई गई और उसे उसी हालत में छोड़ दिया गया। परिणामस्वरूप रेलवे कॉलोनी और स्टेशन से निकलने वाला पूरा गंदा पानी अब सड़क के किनारे और आसपास के क्षेत्र में फैल रहा है ।स्थिति यह है कि फाटक के पास हमेशा जलभराव बना रहता है। तेज धूप में बदबू इतनी अधिक हो जाती है कि वहां कुछ मिनट खड़ा होना भी मुश्किल हो जाता है। वहीं बारिश के दौरान समस्या और विकराल रूप ले लेती है, जब गंदा पानी सड़क तक फैल जाता है और राहगीरों को उसी से होकर गुजरना पड़ता है।

हजारों राहगीर और दुकानदार संक्रमण के खतरे में

इस मार्ग से प्रतिदिन हजारों लोग आवागमन करते हैं। रेलवे फाटक होने के कारण वाहनों और पैदल यात्रियों को कई बार रुकना पड़ता है, लेकिन इंतजार के दौरान उन्हें दुर्गंध और गंदगी का सामना करना पड़ता है। आसपास संचालित दुकानों के व्यापार पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। दुकानदारों का कहना है कि बदबू के कारण ग्राहक दुकान पर रुकना पसंद नहीं करते, जिससे कारोबार प्रभावित हो रहा है ।स्थानीय नागरिकों का कहना है कि कई बार संबंधित अधिकारियों का ध्यान इस गंभीर समस्या की ओर आकर्षित कराया गया, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। क्षेत्रवासियों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही नाले की मरम्मत कर जल निकासी की स्थायी व्यवस्था नहीं की गई तो वे रेलवे प्रशासन के खिलाफ आंदोलन करने को मजबूर होंगे। नगरवासियों ने मांग की है कि रेलवे प्रशासन तत्काल क्षतिग्रस्त नाले का पुनर्निर्माण कर गंदे पानी की निकासी की समुचित व्यवस्था करे। साथ ही क्षेत्र में जमा गंदे पानी की सफाई, नियमित फॉगिंग और कीटनाशक दवा का छिड़काव कराया जाए, ताकि संक्रमण फैलने से रोका जा सके। समस्या के निराकरण हेतु रेल्वे प्रशासन को क्षतिग्रस्त नाले का तत्काल पुनर्निर्माण कराना चाहिए, रेलवे कॉलोनी और स्टेशन के गंदे पानी की स्थायी निकासी की व्यवस्था की जाए, जलभराव वाले स्थान की नियमित सफाई कराई जाए, मच्छरों से बचाव के लिए फॉगिंग एवं दवा का छिड़काव कराया जाए, जिम्मेदार अधिकारियों की लापरवाही की जांच कर कार्रवाई की जाए।

इनका कहना है

रेलवे फाटक निर्माण के दौरान नाले को तोड़कर अधूरा छोड़ दिया गया। आज हालत यह है कि गंदा और बदबूदार पानी सड़क पर जमा हो रहा है। मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है और आसपास रहने वाले लोगों व दुकानदारों का जीवन मुश्किल हो गया है। रेलवे प्रशासन को तत्काल नाले की मरम्मत कर जल निकासी की स्थायी व्यवस्था करनी चाहिए।

सिद्धीक अंसारी
निवासी, पुरानी बस्ती

हमारी दुकान रेलवे फाटक के पास है। गंदे पानी और बदबू के कारण ग्राहक दुकान पर रुकना नहीं चाहते। बरसात में स्थिति और भी खराब हो जाती है। पूरे दिन दुर्गंध के बीच काम करना पड़ता है। रेलवे प्रशासन को लोगों की परेशानी समझते हुए तत्काल नाले की मरम्मत कर जल निकासी की उचित व्यवस्था करनी चाहिए।

स्थानीय दुकानदार,
रेल्वे फाटक, शहडोल

इस मार्ग से प्रतिदिन हजारों लोग गुजरते हैं। रेलवे फाटक बंद होने पर लोगों को काफी देर तक यहीं खड़ा रहना पड़ता है, लेकिन चारों ओर फैली बदबू और गंदे पानी के कारण सांस लेना तक मुश्किल हो जाता है। मच्छरों के कारण डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है। यदि जल्द समाधान नहीं किया गया तो यह गंभीर स्वास्थ्य समस्या बन सकती है। संबंधित विभाग को तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए।

आशीष अग्रवाल
निवासी, भगत सिंह चौक

रेलवे फाटक के पास गंदे नाले का पानी लंबे समय से जमा हो रहा है। पूरे क्षेत्र में दिन-रात बदबू फैली रहती है। मच्छरों का प्रकोप इतना बढ़ गया है कि शाम होते ही घरों और दुकानों में बैठना मुश्किल हो जाता है। छोटे बच्चों, बुजुर्गों और राहगीरों को संक्रामक बीमारियों का खतरा बना हुआ है। कई बार संबंधित अधिकारियों को इस समस्या से अवगत कराया गया, लेकिन अब तक कोई स्थायी समाधान नहीं निकला। रेलवे प्रशासन को तत्काल नाले की मरम्मत कर गंदे पानी की निकासी की व्यवस्था करनी चाहिए, ताकि क्षेत्रवासियों को इस परेशानी से राहत मिल सके।

रोहित कटारे
निवासी, पुरानी बस्ती

संकट 100 घरों के लिए 7 कर्मचारी, हजारों परिवारों के लिए सिर्फ 19, एसईसीएल की व्यवस्था पर उठे सवाल

फिल्टर प्लांट में कर्मचारियों की भारी कमी, हजारों घरों की जलापूर्ति पर बढ़ा संकट

नवभारत,धनपुरी। एसईसीएल सोहागपुर क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण माना जाने वाला धनपुरी फिल्टर प्लांट इन दिनों कर्मचारियों की भारी कमी से जूझ रहा है। यही फिल्टर प्लांट क्षेत्र की आधा दर्जन से अधिक श्रमिक कॉलोनियों सहित हजारों कर्मचारियों और उनके परिवारों तक पेयजल पहुंचाने की जिम्मेदारी निभा रहा है। जलापूर्ति जैसी अत्यंत महत्वपूर्ण व्यवस्था को सुचारु बनाए रखने के लिए यहां मौजूद कर्मचारी अपनी ओर से हरसंभव प्रयास कर रहे हैं, लेकिन लगातार घटती मैनपावर अब इस प्लांट के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनती जा रही है।

जानकारी के अनुसार वर्तमान में इस पूरे फिल्टर प्लांट की जिम्मेदारी केवल 19 कर्मचारियों के कंधों पर है। इनमें 9 महिला कर्मचारी, 3 फोरमैन तथा अन्य तकनीकी एवं सहायक कर्मचारी शामिल हैं। इतनी कम संख्या में कर्मचारी पूरे सिस्टम का संचालन, मशीनों की निगरानी, जल शोधन, मोटरों का संचालन, पाइपलाइन की देखरेख और विभिन्न कॉलोनियों तक निर्बाध जलापूर्ति सुनिश्चित करने का कार्य कर रहे हैं। कर्मचारियों की मानें तो सीमित संसाधनों और कम स्टाफ के बावजूद व्यवस्था बनाए रखने के लिए अतिरिक्त जिम्मेदारियां निभानी पड़ रही हैं। स्थिति इसलिए भी अधिक गंभीर होती जा रही है क्योंकि 31 जुलाई को यहां कार्यरत एक और कर्मचारी सेवानिवृत्त होने जा रहा है। इसके बाद कर्मचारियों की संख्या घटकर मात्र 18 रह जाएगी। ऐसे में पहले से ही दबाव में काम कर रहे कर्मचारियों पर कार्यभार और अधिक बढ़ जाएगा। कर्मचारियों का कहना है कि लगातार सेवानिवृत्ति हो रही है, लेकिन उनके स्थान पर नई नियुक्तियां नहीं होने से हालात हर वर्ष और चुनौतीपूर्ण बनते जा रहे हैं। दूसरी ओर, एसईसीएल के अमली ओपन कास्ट के अंतर्गत आने वाली रीजनल कॉलोनी की व्यवस्था इस पूरे मामले में चर्चा का विषय बनी हुई है। यहां लगभग 100 घरों में पानी की सप्लाई की जिम्मेदारी सात कर्मचारियों के पास है। बताया जाता है कि यहां प्रतिदिन लगभग एक घंटे जलापूर्ति का कार्य होता है, जबकि धनपुरी फिल्टर प्लांट से हजारों घरों तक पानी पहुंचाने के लिए मात्र 19 कर्मचारी कार्यरत हैं। दोनों व्यवस्थाओं के बीच कर्मचारियों की संख्या का यह अंतर अब कई सवाल खड़े कर रहा है। स्थानीय लोगों और कर्मचारियों का कहना है कि जहां पूरे सोहागपुर क्षेत्र के सबसे बड़े फिल्टर प्लांट को सीमित स्टाफ के भरोसे चलाया जा रहा है, वहीं अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र में अधिक कर्मचारियों की तैनाती समझ से परे है। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि आखिर मैनपावर का निर्धारण किस आधार पर किया जा रहा है और सबसे महत्वपूर्ण जलापूर्ति केंद्र को पर्याप्त कर्मचारी क्यों उपलब्ध नहीं कराए जा रहे हैं। जानकार बताते हैं कि एक समय ऐसा था जब इसी फिल्टर प्लांट में लगभग 300 कर्मचारी कार्यरत थे। उस दौरान अलग-अलग कार्यों के लिए पर्याप्त स्टाफ उपलब्ध रहता था और रखरखाव से लेकर संचालन तक सभी कार्य व्यवस्थित ढंग से किए जाते थे। लेकिन समय के साथ लगातार कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति होती गई और उनकी जगह नई नियुक्तियां नहीं होने से आज स्थिति यह हो गई है कि कभी 300 कर्मचारियों वाला यह प्लांट मात्र 19 कर्मचारियों के भरोसे संचालित हो रहा है। कर्मचारियों की कमी का असर केवल कार्यभार तक सीमित नहीं है, बल्कि भविष्य में जलापूर्ति व्यवस्था पर भी इसका प्रभाव पड़ सकता है।